International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 6.340, Volume 04, No. 01(III), January - March, 2022, pp.113-116

संस्कृत साहित्य और हिन्दी सिनेमा

सीमा खड़कवाल*

प्रस्तावना

सिनेमा और साहित्य दोनों में गहरा अन्तः सम्बन्ध रहा है। सिनेमा आरम्भ से ही साहित्य को आधार रूप में साथ लेकर चला है। साहित्य शब्दों के माध्यम से पाठकों के मनो–मस्तिष्क में छवि का निर्माण करता है और सिनेमा तस्वीर और ध्वनि के मेल से बिम्ब निर्माण कर दर्शकों के समक्ष छवि–चित्र का निर्माण करता है। आरम्भ से ही सिनेमा साहित्य को विस्तृत जनमानस तक पहुँचाकर और साहित्य सिनेमा को नये व सशक्त विषय व कहानियाँ उपलब्ध करवाकर एक–दूसरे के लिए परस्पर सहयोगी की भूमिका निभाते रहे हैं। गुलज़ार के शब्दों में कहा जा सकता है कि ''साहित्य और सिनेमा का संबंध एक अच्छे अथवा बुरे पड़ौसी, मित्र या संबंधी की तरह एक दूसरे पर निर्भर है। यह कहना जायज होगा कि दोनों में प्रेम संबंध है।'' 1

हिन्दी सिनेमा अपने आरम्भ से ही साहित्य का ऋणी रहा है। भारत में सन् 1913 में सिनेमा की यात्रा शुरु हुई और तब से ही सिनेमा और साहित्य का साथ निर्विवाद रूप से बना हुआ है।

भारत में सिनेमा का आरम्भ सन् 1913 ई. से हुआ। शुरूआत में मूक सिनेमा में धार्मिक एवं पौराणिक आख्यानों पर ही अधिकतर फ़िल्मों का निर्माण आरम्भ हुआ। ये सभी पौराणिक एवं धार्मिक आख्यान एवं चरित्र संस्कृत के महाकाव्यों रामायण और महाभारत पर आधृत थे। संस्कृत के पुराणों (ग्रन्थों) से भी कुछ प्रसंग एवं चरित्रों को पर्दे पर उतारा गया। भारतीय दर्शक इन पौराणिक कथाओं के पात्रों व घटनाओं से भली–भाँति परिचित थे और इनमें उनकी गहरी रूचि थी। अशिक्षित भारतीय दर्शकों के लिए संवाद व सबटाइटल्स के बिना भी इन घटनाओं को समझना सरल था। सम्भवतः इन्हीं कारणों से धार्मिक व पौराणिक फ़िल्में सवाक् सिनेमा के आगमन तक बनती रही।

रामायण और महाभारत भारतीय साहित्य की ऐसी अमूल्य निधियां है जिन्होंने भारतीय जीवन धारा को विभिन्न स्तरों पर प्रभावित किया है। इन दोनों ग्रन्थों को लेकर सम्पूर्ण भारतीय जनमानस में जो भावात्मक एकता विद्यमान है उसने ही इन कृतियों पर फ़िल्म निर्माण की राह प्रशस्त की। आदि कवि वाल्मीकि रचित संस्कृत के महाकाव्य रामायण के आख्यानों एवं चरित्रों को लेकर अनेक फ़िल्में बनी। इनमें राजा हरिश्चन्द्र (1913), लंका दहन (1917), श्री राम वनवास (1918), अहिल्या उद्धार (1919), सती पार्वती (1920), रामजन्म (1920), लवकुश (1920), रत्नाकर (1921), सती अनुसूया (1921), रामायण (1922), सती अंजनी (1922), हनुमान जन्म (1927), अयोध्या का राजा (1932), सीता (1934), भरत मिलाप (1942),राम राज्य (1943) ,पवन पुत्र हनुमान (1957), अयोध्यापति (1956) आदि है। प्रकाश पिक्चर्स की 'रामराज्य' और 'भरत मिलाप' के निर्देशक विजय भट्ट थे और ये दोनों ही फ़िल्में अत्यन्त सफल रही थी। इन दोनों फ़िल्मों में प्राचीन भारत की भव्यता और समृद्धि की झलक मिलती है।

संस्कृत के महाकाव्य महाभारत के आख्यान पर प्रथम फ़िल्म 'भस्मासुर मोहिनी' (1913) बनी थी। यह फ़िल्म दादा साहब फाल्के द्वारा निर्मित थी। इसे मुम्बई के ओलम्पिया थियेटर में प्रदर्शित किया गया था। अब तक मूक सिनेमा में पुरुष ही स्त्री की भूमिका निभाते थे, इस फ़िल्म में पहली बार दो महिला कलाकारों दुर्गा बाई

* सह आचार्य–हिन्दी, स्व. राजेश पायलट राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बाँदीकुई, दौसा, राजस्थान।

कामत और कमला बाई गोखले ने अभिनय किया था। इन दोनों के रूप में पहली बार भारतीय सिनेमा को महिला अभिनेत्रियाँ मिली। यह फ़िल्म व्यावसायिक रूप में भी काफी सफल रही। महाभारत के विभिन्न प्रसंगों को लेकर बनी अन्य फ़िल्मों में सत्यवान सावित्री (1914), द्रोपदी वस्त्र हरणम (1917), नल–दमयन्ती (1918), सैरंध्री (1919), कच–देवयानी (1919), महाभारत (1920), भक्त विदुर (1921), वीर अभिमन्यु (1922), भीष्म पितामह (1922), राजा परीक्षित (1922), शिशुपाल वध (1922), गुरु द्रोणाचार्य (1923), जरासंध वध (1923), कृष्ण अर्जुन युद्ध (1923), वीर भीमसेन (1923), सावित्री (1924), नल दमयन्ती (1927), देवी देवयानी (1931), द्रोपदी (1931) आदि उल्लेखनीय है।

इसके अलावा श्रीमद्भागवत पुराण के भी विभिन्न स्कन्धों में वर्णित पात्रों एवं घटनाओं को लेकर फिल्में बनी है। भक्त प्रहलाद (1917), श्रीकृष्ण जन्म (1918), कालिया मदर्न (1919), ऊषा–स्वप्न (1919), रूक्मिणी सत्यभामा (1920), श्री कृष्ण–सुदामा (1920), कंस वध (1920), ध्रुव चरित्र (1921), विष्णु अवतार (1921), यशोदा नन्दन (1922), श्री कृष्ण–सत्यभामा (1923), भक्त सुदामा (1927) रूक्मिणी स्वयंवर (1946) आदि समय–समय पर बनी प्रसिद्ध फिल्में हैं।

बाद में आगे चलकर संस्कृत में अनेक ऐसे ग्रन्थों की रचना हुई जिनका उपजीव्य रामायण और महाभारत रहे हैं। महाभारत को 'महाकाव्यों का महाकाव्य' सम्भवतः इसी कारण कहा जाता है कि यह ऐसी आधारभूत कृति है जिसने कई महाकाव्यों और नाट्य कृतियों को जन्म दिया है। संस्कृत साहित्य में महाभारत से प्रेरित रचनाओं में भारवि कृत 'किरातार्जुनीयम', 'माघ कृत', 'शिशुपाल वध' और श्री हर्ष कृत 'नैषधीय चरितम' जैसे श्रेष्ठ महाकाव्य और कालिदास रचित 'अभिज्ञान शाकुन्तलम्' जैसे प्रसिद्ध नाटक लिखे गये। रामायण से प्रेरित रचनाओं में भट्टी कृत 'रावण वधम्' भवभूति कृत 'महावीर चरितम्' और 'उत्तर रामचरितम्' प्रमुख हैं। संस्कृत रचनाकारों ने इन काव्य कृतियों को अपनी विशिष्टता और मौलिकता प्रदान कर अपनी काव्य–प्रतिभा का परिचय तो दिया ही है साथ ही इन आख्यानों का नवोन्मेष भी किया है।

संस्कृत की अनेक काव्य कृतियाँ सिनेमा के रूपहले पर्दे पर चित्रित हुई है, उनमें फ़िल्मकारों की सर्वाधिक प्रिय रचना कालिदास कृत 'अभिज्ञान शाकुन्तलम्' है। शकुन्तला और दुष्यन्त के प्रणय की बेहद खूबसूरत गाथा को फ़िल्मकारों ने कई बार सिने पर्दे पर प्रस्तुत किया है। सर्वप्रथम मूक सिनेमा के दौर में कोहिनूर फ़िल्म कम्पनी ने सन् 1919 ई. में शकुन्तला की कहानी को 'विश्वामित्र मेनका' उर्फ 'शकुन्तला जन्म' नाम से पर्दे पर उतारा। उसके बाद सन् 1920 ई. में पाटनकर बंधुओं ने इसी कहानी पर 'शकुन्तला उर्फ द लोस्ट रिंग' नाम से फ़िल्म बनाई। सन् 1920 में ओरिएंटल फ़िल्म मैन्युफैक्चरिंग कम्पनी की सुचेत सिंह निर्देशित 'शकुन्तला' प्रदर्शित हुई। इसमें अमेरिकी अभिनेत्री डोरोथी किंगडम ने शकुन्तला की भूमिका निभाई थी। इसके बाद सवाक् सिनेमा के आरम्भ में मदान थियेटर्स की संगीत प्रधान फ़िल्म 'शकुन्तला' सन् 1931 ई. में रिलीज हुई। इसमें मास्टर निसार और जहाँआरा कज्जन दुष्यन्त और शकुन्तला की भूमिका में थे। प्रसिद्ध नाटककार राधेश्याम कथावाचक द्वारा लिखे गये और मास्टर निसार और संगीत प्रधान फ़िल्म 'शकुन्तला' सन् 1931 ई. में रिलीज हुई। इसमें मास्टर निसार और जहाँआरा कज्जन द्वारा गाये गये फ़िल्म के गीत बेहद लोकप्रिय हुए। सन् 1931 ई. में सरोज मूवीटोन की एम. भवनानी निर्देशित 'शकुन्तला' प्रदर्शित हुई।

सन् 1942 में वी. शान्ताराम प्रभात फिल्म कम्पनी से अलग हो गए। इसके बाद उन्होंने बम्बई में राजकमल कला मन्दिर की स्थापना की। अपने बैनर की प्रथम फ़िल्म के रूप में उन्होंने कालिदास की ही 'अभिज्ञान शाकुन्तलम्' को 'शकुन्तला' नाम से सन् 1943 में परदे पर उतारा। फिल्म जबरदस्त हिट रही और मुम्बई के 'स्वस्तिक थियेटर में यह 104 सप्ताह तक चली। यह फिल्म और चलती लेकिन वी. शान्ताराम की ही 'डॉ. कोटनीस की अमर कहानी' फिल्म के लिए इसे उतारना पड़ा। वसन्त देसाई के मधुर संगीत से सजी और भव्य स्तर पर बनी यह फ़िल्म कलात्मक दृष्टि से भी उत्कृष्ट थी। यह अमरीका में दिखाई जाने वाली प्रथम भारतीय फिल्म थी जो व्यावसायिक उद्देश्य हेतु प्रदर्शित की गई और इसने वहाँ भी आर्थिक सफलता प्राप्त की। वहीं के 'फिल्म डेली' अखबार में 23 दिसम्बर 1947 के अंक में 'शकुन्तला' पर एक रिव्यू भी प्रकाशित हुआ। न्यूयार्क टाइम्स के समीक्षक ने फिल्म शकुन्तला के लिए लिखा– "कहना नहीं होगा कि इसका अनोखापन की

काफ़ी नहीं है। 'शकुन्तला' अपने आप में जादू है। परीकथा सी कहानी में प्रेमी–प्रेमिका को मिलता है उनका बेटा जिसमें भारत का टार्जन होने की पूरी सम्भावना है। निर्देशन की बात करें तो हॉलीवुड पर नजर गड़ाए दिखता है एक भारतीय निर्देशक! मनमोहक दृश्यावली, सभी कलाकारों द्वारा अनोखा अभिनय, समृद्ध संगीत–कुल मिलाकर हमारे भारतीय मित्रों की ओर से हमारे सिनेमाघरों पर सुदृढ़ दस्तक है यह फिल्म!''2

कालिदास की इस कृति से प्रभावित वी. शान्ताराम ने सन् 1961 में एक बार फिर 'राजकमल कला मन्दिर' के बैनर तले इस कहानी को 'स्त्री' नाम से बनाया। इस बार शकुन्तला की भूमिका में उनकी तीसरी पत्नी संध्या थी और दुष्यन्त की भूमिका में वे स्वयं थे। फिल्म के कला निर्देशक कनु देसाई थे। फिल्म में संगीत सी. रामचन्द्र व गीत भरत व्यास के थे। कला और तकनीकी दृष्टि से बेहतर होने के बावजूद फ़िल्म नहीं चली। कालिदास की शकुन्तला पर अन्य भाषाओं में भी फ़िल्में बनी है। सन् 1961 में असमी भाषा में भूपेन हजारिका निर्देशित 'शकुन्तला' और सन् 1941 में बांग्ला भाषा में ज्योतिष बनर्जी के निर्देशन में 'शकुन्तला बनी।

कालिदास की ही एक अन्य नाट्य कृति 'मालविकाग्निमित्रम्' पर सन् 1929 ई. में दादा साहब फालके ने हिन्दुस्तान फ़िल्म कम्पनी के लिए इसी नाम से फ़िल्म बनाई। इसमें मालव देश की राजकुमारी मालविका और विदिशा के राजा अग्निमित्र के प्रेम और विवाह की कथा है।

कालिदास रचित संस्कृत का प्रसिद्ध खण्ड काव्य है 'मेघदूत'। कालिदास की इस कृति पर 'मेघदूत' नाम से सन् 1945 में कीर्ति पिक्चर्स के बैनर तले देवकी बोस निर्देशित फ़िल्म बनी। लीला देसाई और शाहू मोडक मुख्य भूमिका में थे। फ़िल्म के संगीतकार कमलदास गुप्ता थे। प्रियतमा के वियोग में व्याकुल शापग्रस्त यक्ष की वेदना को जगमोहन ने अपने सुरीले स्वर से साकार कर दिया था। उनका गाया 'ओ वर्षा के पहले बादल, मेरा सन्देशा ले जा' काफी लोकप्रिय हुआ था।

संस्कृत के प्रसिद्ध कवि भवभूति की 'मालती माधव' नामक कृति में पद्मावती की कन्या माधवी और विदर्भ नरेश के अमात्य देवरात के पुत्र माधव की कथा है। सर्वप्रथम भवभूति की 'मालती माधव' पर सन् 1922 में फ़िल्म बनी। इसके बाद सन् 1929 में दादा साहब फाल्के ने इसी नाम से हिन्दुस्तान फ़िल्म कम्पनी के लिए फ़िल्म बनाई। सन् 1933 में सरोज मूवीटोन ने ए.पी. कपूर के निर्देशन में 'मालती माधव' को एक बार फिर दर्शकों के सामने प्रस्तुत किया। इस फ़िल्म में संगीत सुरेन्द्रनाथ भाटिया का था। कलाकारों में जेबुन्निसा, सरदार अख्तर, माधव काले, अशरफ खान आदि प्रमुख थे। सन् 1951 में प्रसन्न पिक्चर्स के बैनर तले बनी 'मालती माधव' का निर्देशन एम. नीलकण्ठ ने किया था। दुर्गा खोटे, अनन्त मराठे, बालक राम, बेबी शकुन्तला, राज किशोर, इन्दु, सुमन आदि कलाकारों ने इस फ़िल्म में अभिनय किया था। लता मंगेशकर के गाये गीत 'मन सौंप दिया अनजाने में', और 'कोई बना आज अपना' उस समय बेहद लोकप्रिय हुए थे।

भवभूति रचित 'उत्तर रामचरित' पर विजय भट्ट ने सन् 1943 ई. में 'राम राज्य' नामक फ़िल्म का निर्माण किया। यह रामायण के उत्तरकाण्ड पर आधारित है। इसमें वनवास से लौटने के पश्चात् राम के राज्याभिषेक और सीता के निर्वासन, वाल्मीकि आश्रम में लव कुश के जन्म और पालन–पोषण, उनके द्वारा अश्वमेघ यज्ञ का घोड़ा पकड़ने, राम दरबार में रामकथा का गायन आदि घटनाओं को आधार बनाया गया है। फ़िल्म में प्रेम अदीब और शोभना समर्थ राम–सीता की भूमिका निभा कर जनता में बेहद लोकप्रिय हो गये थे।

शूद्रक रचित 'मृच्छकटिकम' संस्कृत साहित्य में अत्यन्त लोकप्रिय रूपक रहा है। इसका कई विदेशी भाषाओं में भी अनुवाद हुआ है। सन् 1920 ई. में सुचेत सिंह की 'मृच्छकटिक' इसी संस्कृत रुपक पर आधारित थी। इसी कृति पर सन् 1929 ई. में दादा साहब फाल्के ने हिन्दुस्तान फ़िल्म कम्पनी के लिए 'वसंतसेना' नामक फ़िल्म बनाई। 'मृच्छकटिकम्' उज्जैन नगरी की प्रख्यात और समृद्ध गणिका वसंत सेना और कुलीन ब्राह्मण युवक चारू दत्त की सामाजिक सन्दर्भों के मध्य पल्लवित होती प्रणय कथा है। सन् 1934 में वसन्त मूवीटोन की जगतराय पेसुमल आडवाणी निर्देशित 'वसंत सेना' प्रदर्शित हुई। इसमें मिस जोहरा, शंकर राव, मिस गुलाब, सितारा देवी, सुंदर राव नादकर्णी ,काशीनाथ आदि प्रमुख भूमिकाओं में थे। संगीत माधव लाल मास्टर का था। सन् 1942 में अत्रे पिक्चर्स के बैनर तले गजानन जागीरदार निर्देशित वसंत सेना प्रदर्शित हुई। इसमें उस दौर

की प्रसिद्ध अभिनेत्री वनमाला ने 'वसंत सेना' की भूमिका निभाई थी। शाहू मोडक 'चारूदत्त' एवं गजानन जागीरदार 'शकार' की भूमिका में थे। मृच्छकटिकम की कथा पर ही सन् 1984 में 'उत्सव' नामक फ़िल्म बनी। फ़िल्म के निर्माता थे शशि कपूर और निर्देशक थे प्रख्यात अभिनेता, साहित्यकार और निर्देशक गिरीश कर्नाड। इसमें प्रसिद्ध अभिनेत्री रेखा 'वसंत सेना' की भूमिका में थी। चारूदत्त की भूमिका में शेखर सुमन थे और शकार की भूमिका में शशि कपूर थे। फिल्म में लता मंगेशकर और आशा भौंसले का गाया गीत 'मन क्यूं बहका री बहका' बेहद प्रसिद्ध हुआ। 'मृच्छकटिकम' पर अन्य भाषाओं में भी फ़िल्में बनी जिनमें कन्नड़ में 1931, 1941 में, तमिल में सन् 1936 में, तेलुगु में सन् 1967 में और मलयालम में 1985 में बनी।

सन् 1934 में प्रसिद्ध फ़िल्म कम्पनी अजंता सिनेटोन ने 'वासवदत्ता उर्फ शाही गवैया' नाम से फ़िल्म बनाई। फ़िल्म का निर्देशन पी.वाई. अल्टेकर ने किया था। यह फ़िल्म संस्कृत के प्रख्यात रचनाकार भास द्वारा रचित स्वप्न वासदत्तम पर आधारित थी। कौशाम्बी के इतिहास प्रसिद्ध राजा उदयन और अवन्ति की अनुपम सुन्दरी राजकुमारी वासव दत्ता के प्रणय और विवाह और वासवदत्ता के त्याग को केन्द्र में रखकर लिखी गयी कथा है। अभिनेत्री बिब्बो ने वासवदत्ता की ओर अभिनेता बी. साहनी ने उदयन की भूमिका निभाई थी। फ़िल्म में जयराज, ताराबाई, पद्मा शालिग्राम (रानी पद्मावती) और भूडो आडवाणी ने भी अभिनय किया था।

भारतीय जनसामान्य प्रायः संस्कृत की साहित्यक कृतियों से अपरिचित ही रहा हैं। हिन्दी सिनेमा ने ही संस्कृत साहित्य को आम दर्शक तक पहुॅचाने का महत्वपूर्ण कार्य किया है। हालांकि अभी भी संस्कृत साहित्य की अनेक अनुपम कृतियों के फिल्मांतरण की सम्भावनाएं हैं और उम्मीद की जानी चाहिए कि संस्कृत की अन्य साहित्यक कृतियॉ भी फिल्मी पर्दे पर दिखाई देगी।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. रतन कुमार पांडेयः सम्पादक,मीडिया और साहित्य अंर्तःसंबंध, आनन्द प्रकाशन, दिल्ली, 2014, पृष्ठ सं–66
2. Picture plus online.com ; part - 102
3. en.m.wikipedia.org
4. https://m.imdb.com
5. जवरीमल्ल पारख, लोकप्रिय सिनेमा और सामाजिक यथार्थ, अनामिका पब्लिशर, 2019

❖◆❖